VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

प्रगतिवादी कवि ः शिवमंगल सिंह सुमन

डॉ. विजय कुमार

हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रगतिवाद को एक विचारधारा कहा जा सकता है| इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य पहले तो सही मायने में प्रगति का अर्थ समझे और फिर वह जीवन में निरंतर विकास करता रहे| मानव अपनी उन सभी समस्याओं पर काबू पाए और उनसे लड़ने को तैयार हो जाए जो उसके विकास में बाधक हो रही हैं|

सन् १९३५-१९३६ के बाद छायावादी प्रवृत्तियों के विरूध एक तीव्र प्रतिकिया हुई| यह प्रतिकिया छायावाद के व्यक्तिनिष्ठ कल्पना लोक के विरूद्ध थी| जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि छायावादी काव्य साधारण मानव जीवन से सर्वथा अलग होकर काफी दूर चला गया था क्योंकि उसमें भावों की सूक्ष्मता, कल्पना तथा प्रकृति-चित्रण ही प्रधान स्वर हो गया था| छायावादी काव्य में व्यक्तिगत अनुभूति एवं वेदना ही साहित्य का केन्द्र-बिन्दु बन चुकी थी तो प्रबुद्ध एवं संवेदनशील मानवतावादी प्रगतिशील साहित्यकारों ने छायावाद की यर्थाथवादी जीवन से पलायनवादी प्रवृति को समाज के लिए सर्वथा अहितकर एवं अवांछनीय माना तथा जीवन के कटु यर्थात को संघर्ष मय प्रगतिवाद एवं आशावाद की ओर मोडा| आध्यात्मिक स्तर पर इसे नास्तिकतावाद भी कहा जा सकता है क्योंकि प्रगतिवादी साहित्यकार किसी प्रकार के साहित्यिक बंधनों को भी दासता समझते हैं| शिवमंगल सिंह सुमन भी किसी भी प्रकार की दासता को स्वीकार न करने वाले कवि थे | सुमन जी ने सदा ही प्रगतिशील लेखन का कार्य किया| सुमन जी का जन्म ५ अगस्त १९१५ को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ था| भारत की स्वतंत्रता और देशभक्ति पर भी सुमन जी ने खूब लिखा|सुमन जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीयों को जागाने का सफल प्रयास किया है| हमें आज़ादी तभी मिल सकती है जब हम जाग जाएँगे और आगे बढ़ेंगे | तभी परतंत्रत की बेड़ियाँ टूटेंगी|

"अरूणोदय के पुण्य प्रहर में
बिस्तर पर मत लेटो
अँगड़ाई लेकर मत बैठो
बिखरा स्वर्ण समेटो
खड़े खेत में झपकी मत लो
नींद खुमारी त्यागो
मेड़ न बाँधो, बाड़ न रोपो
रात-रात भर जागो
एक दशक में सदियों का
सारा अभाव भरना है
नये देश की नयी फसल की
रखवाली करना है
कितनी कुरबानी के बल पर
नया सवेरा लाए
गाफिल मत हो कांति
दवार तक आकर लौट न जाए"

नया मोड़ १

जैसा कि सर्वविदित है कि भारत एक ऐसा देश है जिसमें आर्थिक विशमताएँ बहुत हैं| साहित्यकारों ने मार्क्स वाद तथा भारतीय साम्यवाद से प्रेरणा ग्रहण करके भारतीयों की दीन-हीन अवस्था का यथार्थ चित्रण करके आम आदमी की जिन्दगी की कठिनाइयों को साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत बनाया| जिसके परिणामस्वरूप रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक प्रवृतियों का विरोध हुआ| भारत के गरीब, मज़दूर और कृषक समाज के दिल क दर्द को लेकर प्रगतिवाद आगे बढ़ा| गरीब जनता जो भूख से व्याकुल हो चुकी थी और जिसके शरीर पर थोड़ा सा माँस चिपक कर रह गया था, उसका दर्द कवि से बिलकुल भी देखा न जा सका|

"क्या मानव इस तरहनिराश्रित
धरती पर बेहाल पड़ा है
यह किसका कंकाल पड़ा है
यह किसके भविष्य की आशा
किस दुखिया का एक सहारा
किस अभागिन का सुहाग यह
किस मृगनयनी का यह दृगतारा
किसकी गोदी की शोभा यह
किस माई का लाल पड़ा है
यह किसका कंकाल पड़ा है"

यह किसका कंकाल पड़ा है २

इस प्रकार बुजुर्आ संस्कृति की विचारधारा तथा प्राचीन रूढ़ियों और मान्यताओं को तोड़कर विद्रोह की भावना उग्र रूप धारण कर गई| जिस प्रकार आर्थिक क्षेत्र में पूंजीपतियों तथा सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष चलता रहता है, उसी प्रकार साहित्य में बुर्जुआ शोषक साहित्यकारों के प्रति नवीन विचारधारा के कवियों ने इस प्रकार की भावना व्यक्त की जिससे विद्रोह और कांति का स्वर मुखरित हुआ| शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी ने भी वीर भारतीयों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया |

आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो कुछ तो शर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे , इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो , विद्रोह करो
जिसने निज स्वार्थ सदा साधा
जिसने सीमाओं में बाँधा
आओ उससे उसकी निर्मित जगती के अणु अणु कण कण
विद्रोह करो , विद्रोह करो
विद्रोह करो , विद्रोह करो ३

आज के समय में प्रगतिवाद के कई अर्थ निकल रहे हैं| पहले तो यह कि राष्ट्रीय और सामाजिक कविताओं के लिये और दूसरे वे जो मार्क्सवादी चिंतन के आधार पर लिखी जा रही हैं| प्रगतिवाद की परंपरा की बात की जाए तो यह परंपरा कबीर और तुलसी के समय से नही चली आ रही| वर्तमान प्रगतिवादी दृष्टिकोण मार्क्सवाद पर आधारित है जो समाज की संपूर्ण व्यवस्थाओं को देखने का अपना ही नजरिया रखे हुए है| प्रगतिवादी कवियों ने 'नई संस्कृति' की कामना की है |जीवन पथ पर थक कर हारा हुआ इंसान नई संस्कृति की रचना नहीं कर सकता लेकिन इस प्रकार के थके हुए इंसान को छोड़ा भी नहीं जा सकता है| इसलिए सुमन जी ने ऐसे थके-हारे इंसान को यह याद दिलाने का प्रयास किया है कि तुझमें शक्ति भरी पड़ी है और तूझे अभी मंजिल का बहुत बड़ा रास्ता तय करना है |

"गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यूँ रहूँ दर-दर खड़ा
जब आज मेरे सामने है
रास्ता इतना पड़ा
जब तक न मंजिल पा सकूँ ,तब तक मुझे न विराम है
चलना हमारा काम है , चलना हमारा काम है"

चलना हमारा काम है ४

प्रगतिवादी कविता ने मानव जीवन का व्यापक चित्रण किया है| इस धारा के कवियों ने किसी महात्मा का चित्रण न करके जन साधारण को ही अपने काव्य का विषय बनाया| आदिकाल के कवियों का मुख्य विषय सामन्त वर्ग का चित्रण करना था| रीतिकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं में श्रृंगार को अधिक निखारा है| भक्तिकालीन कवि ईश्वर में ही डूबा रहा गया| लेकिन प्रगतिवादी काव्य में पहली बार इन कवियों ने जन साधारण के कष्टों का चित्रण किया है| इस प्रकार प्रगतिवाद की एक मुख्य विशेषता मानवतावाद का प्रकाशन रही है| लेकिन इस मानवतावाद के चित्रण में आँसू के स्थान पर आक्रोश की भावना अधिक प्रबल रही है| प्रगतिशील कविता में यर्थाथ की प्रतिष्ठा हुई है| प्रगतिवाद में आकर कविता जन-जीवन से पल बढ़ रही है| सुमन जी अपनी कविता में पूजा-पाठ के स्थान पर कर्म को महत्त्व देते हैं|

व्यर्थ गया सब स्नेह-समर्पण
व्यर्थ गया सब पूजन अर्चन
वे ना हिले-डुले मुस्काए, हम अपना हिय हारे
पत्थर के थे देव हमारे
मुख पर ममता की माया थी
तन पर जड़ता की छाया थी
भिगा न पाए उसका अंचल, मेरे निर्झर खारे
पत्थर के थे देव हमारे

पत्थर के थे देव हमारे ५

प्रगतिवादी कविता के बारे में कहा जाए तो इसने प्राकृतिक,सामाजिक और मानसिक तीनों क्षेत्रों में कविता को प्रतिबिम्बित किया है| लेकिन सामाजिक चित्रण जितना यर्था त बन सकता है उतना अन्य क्षेत्र नहीं| यर्थाथ चित्रण भी जितना सामान्य नहीं, वैज्ञानिक खोज की भाँति गहराई से हुआ है| यही कारण है कि ये रचनाएँ आधुनिक युग की जटील समस्याओं और यर्थाथ को उकेर सकीं हैं| इस कविता ने समय के साथ-साथ चलने का प्रयत्न किया है| केवल वर्तमान ही नहीं बल्कि भावी यर्थाथ का चित्रण भी इस कविता ने किया है |

इस युग की एक अन्य उपलब्धि यह भी रही है कि इस काल की कविताओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफलता हासिल की है| इन रचनाओं मे विश्व-बन्धुत्व की भावना पर अधिक बल दिया है| इस प्रकार की अंतरराष्ट्रीय प्रेम-भावना का मिलना अन्य किसी काव्यधारा में नहीं दिखाई देता| इन कविताओं मे स्वस्थ प्रेम-भावना मिलती है| सांस्कृतिक धरातल पर इस प्रेम-भावना का एक विशेष महत्व है|

इस काव्यधारा ने शिल्प के क्षेत्र में भी कुछ उपलब्धियाँ हासिल की हैं|" शिवमंगलसिंह सुमन की कविताएँ भी दो तरह की हैं| एक तो वे जो गीत हैं| दूसरी वे जो अधिक लंबी और उपदेशात्मक हैं| उनकी छोटी-छोटी कविताएँ और गीत जहाँ जहाँ कला और प्रभाव की दृष्टि से उत्तम दिखते हैं वहाँ बड़ी-बड़ी कविताएँ अधिक स्थान घेरती हैं और उनका प्रभाव बिखर जाता है क्योंकि वे ध्वन्यात्मक और चित्रात्मक न होकर इतिवृत्तात्मक होती हैं|" ६

जनसंपर्क की भाषा नये और परंपरागत दोनों ही शैलियों का व्यापक प्रयोग मिलता है| प्रगतिवादी कविता का सृजन किसी एक प्रवृति विशेष के लोगों ने नहीं किया है| कई प्रकार की रूचियों वाले लोगों ने प्रगतिवादी काव्य लेखन पर अपनी कलम चलाई है| हिन्दी की किसी अन्य काव्यधारा में इतनी अधिक विविधता नहीं देखने को मिलती है| सुमित्रानन्दन पंत,सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला',रामधारीसिंह 'दिनकर',गिरिजाकुमार माथुर,भवानी प्रसाद मिश्र,नागार्जुन,गजानन माधव 'मुक्तिबोध'केदारनाथ अग्रवल,शैलेन्द्र, शिवमंगल सिंह 'सुमन',दुष्यंत कुमार,गोपालदास सक्सेना 'नीरज',वीरेन्द्र कुमार जैन आदि कवियों की प्रवृतिगत विशेषताएँ सहजता से ही इस काव्यधारा में देखने को मिल जाती है|

प्रगतिवादी कविताओं की सीमाओं की बात करें संकीर्णता इसकी सबसे बड़ी सीमा है|

" 'सुमन' प्रगतिवादी कवियों में अग्रणी हैं| उन्होंने केवल उपदेशक की तरह प्रगतिवादी विचारों का प्रसार ही नहीं किया अपितु प्रगतिवादी साहित्य को अनुभूतियाँ और भाव भी प्रदान किया है|इनके प्रमुख काव्य संग्रह 'हिल्लोल', 'जीवन के गान' और 'प्रलय सृजन' हैं| इनके काव्य में शोषितों के प्रति करूणा तथा सहानुभूति, वेदना, संर्घष और क्रांति की भावना को स्वर मिलता है| कवि मानव-मानव में समानता के व्यवहार को न देखकर क्रांति के लिए तत्पर हो जाता है"...

विस्तृत पथ है मेरे आगे
उस पर ही मुझको चलना है
चिर शोषित असहायो के संग
अत्याचारों को दलना है ७

दूसरी सबसे बड़ी सीमा विषय-वस्तु है| इन विषय वस्तुओं के इर्द-गीर्द ही कोई काव्य-धारा चक्कर लगाती रहती है| किसी महान व्यक्तित्व का अभाव होना भी हिन्दी की प्रगतिशील कविता की सीमा है| कुछ लोग इस धारा की एक बड़ी सीमा उसकी सपाट सिद्धांत-कथन की वृति को भी मानते हैं| कई कवियों की रचनाओं में यह प्रवृति दिखाई देती है| अपनी सीमाओं के बावजूद हिन्दी की प्रगतिशील कविता ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है| कुल मिलाकर कहा जाए तो इस काव्य-धारा ने अपनी पूर्व काव्य धाराओं को एक नयापन देने का सफल प्रयास किया है|

"वस्तुतः डॉ 'सुमन' प्रगतिवादी विचारों को काव्य का सच्चा आयाम दे पाये हैं| उन्होंने जिस भी भाव को व्यक्त किया है, उसे सच्ची अनुभूति और तल्लीनता से प्रस्तुत किया है| प्रगतिवादी विचारों को अपनाना और उन्हें प्लेटफार्मी शैली में प्रस्तुत कर देना प्रगतिवाद के प्रचार में तो सहायक साबित हो सकता है किन्तु उसमें काव्यात्मकता

का अस्तित्व तो तभी स्वीकारा जा सकता है जबकि विचारों को अनुभूति में परिणत करते हुए कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया हो| सुमन जी में यह विशेषता भली-भाँति परिलक्षित होती है|"८

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने एक स्थान पर लिखा है-" साहित्य किसी जाति की रक्षित वाणी की वह अखण्ड परंपरा है जो उसके जीवन के स्वतंत्र स्वरूप की रक्षा करती हुई जगत की गति के अनुरूप उत्तरोत्तर उसका अंतर्विकास करती चलती है| उसके भीतर प्रचीन के साथ नवीन का इस मात्रा में और इस सफाई के साथ मेल होता चलता है कि उसके दीर्घ इतिहास में कालगत विभिन्नताओं के रहते हुए भी यहाँ से वहाँ तक एक ही वस्तु के प्रसार की प्रतीती होती होती रहती है|

यहाँ शुक्ल जी ने कुछ बातों को बिल्कुल ही स्पष्ट कर दिया है कि पहले तो यह कि साहित्य मानव जीवन से जुड़ा हुआ है| दूसरे कि युग परिवर्तन के साथ-साथ इसमें भी परिवर्तन होता रहता है| काल विभाजन के आधार पर भी यह आसनी पूर्वक कहा जा सकता है कि आधुनिक काव्य साहित्य लोक मंगल की भावना से ही प्रेरित रहा है| लोक से टूट जाने का अर्थ है अमंगल से प्रेरित होना|

यह सही है कि प्रगतिवादी कवियों ने काव्य को समाज के बीच प्रतिष्ठित करने का भरसक प्रयास किया लेकिन क्योंकि यह विचारधारा राजनीति से प्रेरित थी इसलिए यह संकुचित ही रही| राष्ट्रीय और सामाजिक भावना के प्रसार के दृष्टिकोण से अवश्य ही सराहनीय है|

संदर्भ सूची

१.विंध्य हिमालय- शिवमंगल सिंह 'सुमन' , आत्माराम एंड संस , दिल्ली ०६ , पृष्ठ ४६
२.जीवन के गान- शिवमंगल सिंह 'सुमन' , आत्माराम एंड संस , दिल्ली ०६ , पृष्ठ ९५
३.जीवन के गान- शिवमंगल सिंह 'सुमन' , आत्माराम एंड संस , दिल्ली ०६ , पृष्ठ ९१
४. हिल्लोल - शिवमंगल सिंह 'सुमन' , सरस्वती प्रेस, बनारस , पृष्ठ ३७
५. हिल्लोल - शिवमंगल सिंह 'सुमन' , सरस्वती प्रेस, बनारस , पृष्ठ ३४
६.हिन्दी साहित्य का इतिहास , डॉ. नगेंद्र , मयूर पेपर बैक्स , दिल्ली , पृष्ठ ६२६
७.हिन्दी साहित्य का विकास , डॉ. वासुदेव शर्मा , कला मंदिर , दिल्ली , पृष्ठ १६२
८.हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास , गणपतिचंद्र गुप्त , कला मंदिर , दिल्ली , पृष्ठ १३६

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com